श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

खटरुती

।। वरखा रुत ।।

राग मलार

मारा वालाजी रे वल्लभ, कहूं एक विनती रे।
मारा करम तणी रे कथाय, सुणो मारी आप वीती रे।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से विनती करके कहती हैं, हे मेरे प्यारे वालाजी! मैं अपने किए हुए कर्मों की तथा मेरे ऊपर जो बीती है, उसका हाल सुनाती हूं।

वाला आवयो ते मास असाढ, के रुत मलारनी रे।
जाणूं करी रे वालासूं विलास, लेसूं लाण आधारनी रे।। २ ।।

हे वालाजी! आषाढ़ का महीना आ गया है। ऋतु मल्हार की है। मेरे मन में चाहना थी कि ऐसी सुन्दर ऋतु में वालाजी (प्रियतम) के साथ मैं विलास करूंगी और अपने प्रीतम के प्रेम का लाभ लूंगी।

मारी जोगवाई हुती जेह, सुफल थासे आवारनी रे।
जाण्यूं आवी माया मांहें, भाजसूं हाम संसारनी रे।। ३ ।।

सोचती थी कि इस बार मेरा शरीर सफल हो जायेगा और माया के बीच में अपनी संसार की इच्छा पूर्ण कर लूंगी।

वरखा रुते करमे काढी वदेस, अवगुण हुता अपार रे।
हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोण सार रे।। ४ ।।

वर्षा ऋतु में हमारे कर्मों ने परदेश भेज दिया, क्योंकि मुझमें बेशुमार अवगुण थे। अब इस समय धनी के बिना कौन हमारी खबर लेगा ?

वाला वरसे ते मेघमलार, वीजलडीना साटका रे।
मूने वालाजी विना आ रुत, लागे अंग झाटका रे।। ५ ।।

हे वालाजी! मल्हार ऋतु में पानी बरस रहा है और बिजली चमक रही है। हे वालाजी! ऐसी ऋतु में आपके बिना मेरे अंग में झटके लगते हैं।

मोरलिया करे रे किंगोर, सुणीने गरजना रे।
मारो जीव आकुल व्याकुल थाय, सुणी स्वर कोयलना रे।। ६ ।।

बादलों की गर्जना सुनकर मोर कलोल कर रहे हैं। कोयल की मस्ती भरी आवाज सुनकर मेरे जीव में बहुत अधिक दुःख होता है।

मूने केम करी रैणी जाय, वपैया पिउ पिउ लवे रे।
सुंदरी कहे आवार, तेडो चरणे हवे रे।। ७ ।।

मेरी रात्रि कैसे बीते? पपीहा पिउ-पिउ बोल रहा है। सुन्दरी (श्री इन्द्रावतीजी) कहती हैं, हे वालाजी! मुझे अब अपने चरणों में बुलाओ।

निस दिवस दोहेली थाय, पिउजी विना अंगना रे।
मारूं कालजडूं रे कपाय, मारा वालाजी विना रे।। ८ ।।

प्रीतम के बिना हे धनी! अंगना के दिन-रात बड़ी मुश्किल से कटते हैं। हे मेरे वालाजी! आपके बिना मेरा कलेजा फटता है।

अचके वा वाए, उछले वन वेलडी रे।
हूं तो वालाजी विना रे वदेस, झुरूं छूं एकली रे।। ९ ।।

ऐसे सुन्दर मौसम में हवा रुक-रुक कर आती है, जिससे वन की बेलें उछलती (लहराती) हैं, परन्तु मैं वालाजी के बिना अकेले परदेश में तड़प रही हूं।

मारी वेहेली ते लेजो सार, वालानी हूं विरहणी रे।
मूने दिवस दोहेला जाए, वसेके रैणी रे।। १० ।।

हे मेरे प्रीतम! मैं आपकी विरहिणी हूं। मेरी जल्दी खबर लेना। मेरा दिन बड़ी मुश्किल से बीतता है और विशेषकर रात्रि।

इंद्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणा रे।
में जे कीधां रे अपार, वालाजीसूं अति घणा रे।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरे अवगुणों, जो मैंने आपसे बेशुमार किए हैं, को भुला दो।

हवे वादल मलियारे मलार, सोभा लिए वनराय रे।
रुचियो ते वरसे मेह, तेडी भीडो अंगनाय रे।। १२ ।।

अब मल्हार ऋतु में बादल घिर रहे हैं। वन की शोभा बढ़ रही है। रुचता और मनभावन पानी बरस रहा है। ऐसे में मुझ अंगना को बुलाकर लिपट जाओ।

धरा ए कीधो सिणगार, डूंगरडा नीलया रे।
एणी रुते रे आधार, करो सीतल काया रे।। १३ ।।

धरती ने चारों ओर की हरियाली से शृंगार किया है। पर्वत भी हरे दिखाई देते हैं। इस ऋतु में, हे मेरे प्रीतम! आकर मेरे अंग को तृप्त (शान्त) करो।

मारी वेहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे।
पछे आवीने लेजो सार, काया पडी हसे रे।। १४ ।।

मेरी जल्दी सुध लेना, नहीं तो जीव निकल जाएगा। बाद में आकर सुध लोगे तो यह तन मुर्दा पड़ा मिलेगा।

मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे।
एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे।। १५ ।।

हे वालाजी! मुझ में बहुत अवगुण हैं, किन्तु आप तो मेरे पति हैं। जुदाई क्यों देते हो? इन्द्रावती के इन वचनों को सुनकर बुला लीजिए।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १५ ।।

।। सरद रुत ।।
राग सामेरी

सरदनी रुत रे सोहामणी रलियामणी, मूने वालाजी विना केम जाए हो वालैया।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया।। १ ।।

हे वालाजी! शरद ऋतु बहुत सुहावनी और रमणीय है, किन्तु आपके बिना यह कैसे बीते? मैं विदेश में हूं। आपकी जुदाई में एक-एक पल सौ-सौ वर्षों के समान बीत रहा है।

वाला जी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर।
पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर।। २ ।।

हे वालाजी! मटमैला जल बह गया है। अब स्वच्छ पानी आ गया है। हे प्रीतम! ऐसे में अकेली मैं मन में कैसे धीरज धरूं?

वालाजी रे वन छाहूं द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आवार।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने चरणे तेडो आधार।। ३ ।।

हे वालाजी! वन में लताएं वृक्षों पर चिपट रही हैं और अपने प्रीतम की सुध दे रही हैं। हे धनी! मैं विदेश में हूं। मुझे चरणों में बुलाओ।

वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर भरिया निवाण।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखंता सूके प्राण।। ४ ।।

हे वालाजी! पर्वतों से सुन्दर जल के झरने झर रहे हैं। नदी और तालाब भर गए हैं, परन्तु मेरे लिए तो आप ही जल हैं, जिनके बिना मेरे प्राण रो-रोकर सूखे जा रहे हैं।

वालाजी रे जीव मारो मूने दहे, अंग ते उपजे दाझ।
अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो राज।। ५ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपका वियोग मुझे जलाता है। मेरे अंग में विरह की आग लग रही है। मैं जानती हूं कि मेरे बहुत अवगुण हैं, किन्तु, धनी! तुम मन में इनका विचार मत करो।

वालाजी रे श्रावण मासनी अष्टमी, कांई कृष्ण पखनी जेह।
मूने ए रैणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह।। ६ ।।

हे धनी! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी आई है। आपके बिना मेरी यह रात्रि बड़ी कठिनाई से बीती।